EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

वसुधैव कुटुंबकम् : प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा से डिजिटल उच्च शिक्षा तक— विकसित भारत 2047 हेतु राष्ट्र-निर्माण का शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य

संगीता ऑस्वल्ड थॉमस
अनुसंधान छात्रा
पदव्युत्तर शिक्षण विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विद्यापीठ, नागपुर

सारांश (Abstact):
यह शोध 'वसुधैव कुटुंबकम्' के दर्शन के आलोक में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, डिजिटल उच्च शिक्षा और विकसित भारत @2047 के शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा परंपरा का मूल उद्देश्य नैतिकता, चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ व्यक्ति का सर्वांगीण विकास रहा है। आधुनिक डिजिटल शिक्षा ने ज्ञान की पहुँच और कौशल विकास को बढ़ाया है, किंतु मानवीय मूल्यों के संरक्षण की चुनौती भी उत्पन्न की है। शोध निष्कर्ष दर्शाते हैं कि प्राचीन ज्ञान और डिजिटल शिक्षा का समन्वय ही विकसित भारत @2047 के लिए नैतिक, कुशल और वैश्विक दृष्टि संपन्न नागरिकों के निर्माण का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करता है।

प्रमुख शब्द (Key Words): वसुधैव कुटुंबकम्, प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, डिजिटल उच्च शिक्षा, राष्ट्र-निर्माण, विकसित भारत 2047, शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना (Introduction):

'वसुधैव कुटुंबकम्'—"संपूर्ण विश्व एक परिवार है"—के सिद्धांत ने भारतीय दर्शन और शिक्षा परंपरा में एक वैश्विक और मानवीय दृष्टिकोण को जन्म दिया। इसका सटीक संदर्भ महाउपनिषद, अध्याय 6, श्लोक 71–73 में मिलता है-

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम् ॥"

इसका अर्थ है यह अपना है, वह पराया है -ऐसा विचार संकीर्ण सोच वाले लोगों का होता है। उदार हृदय वालों के लिए पूरी पृथ्वी ही एक परिवार यह विचार भारतीय दर्शन और शिक्षा परंपरा को वैश्विक, मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है तथा शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण में सह-अस्तित्व और सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्व देता है। भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा ज्ञान के साथ चरित्र निर्माण और मानवीय मूल्यों पर केंद्रित रही है। आधुनिक डिजिटल युग में इन मूल्यों को उच्च शिक्षा से जोड़ना आवश्यक है, ताकि तकनीकी प्रगति के साथ शिक्षा नैतिक और समाजोपयोगी बनी रहे। विकसित भारत @2047 की परिकल्पना में उच्च शिक्षा से कुशल, नैतिक और वैश्विक दृष्टि संपन्न नागरिकों के निर्माण की अपेक्षा है। यह अध्ययन प्राचीन ज्ञान, डिजिटल उच्च शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण के बीच संबंधों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

साहित्य समालोचना (Literature Review):

'वसुधैव कुटुंबकम्' करुणा, सह-अस्तित्व और सार्वभौमिक कल्याण पर आधारित दर्शन है, जो शिक्षा के माध्यम से नैतिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देता है। रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी की शैक्षणिक क दृष्टि तथा UNESCO की Global

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

Citizenship Education की अवधारणा 'वसुधैव कुटुंबकम्' के मूल भाव से साम्य रखती है। Nussbaum के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य वैश्विक नागरिकता और नैतिक विवेक का विकास होना चाहिए ।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को नैतिकता, आत्म-अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त सर्वांगीण विकास का माध्यम माना गया है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1951) और धर्मपाल (2000) के अनुसार भारतीय शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण और मूल्य-आधारित सामुदायिक विकास रहा है। समकालीन विद्वान आधुनिक शिक्षा में IKS के पुनः समावेश को आवश्यक मानते हैं, जिससे मानवीय और सामाजिक विकास सशक्त हो सके।

Salmon (2013) और Selwyn (2016) डिजिटल शिक्षा को प्रभावी मानते हैं, पर इसके सामाजिक प्रभावों पर भी प्रश्न उठते हैं। भारतीय संदर्भ में NEP 2020 डिजिटल और बहुविषयक उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। UNESCO और OECD के अनुसार डिजिटल शिक्षा ज्ञान के लोकतंत्रीकरण में सहायक है, हालांकि डिजिटल विभाजन और गुणवत्ता अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

हालिया शोध दर्शाते हैं कि तकनीक-केंद्रित शिक्षा में मानवीय मूल्य और नैतिकता का समावेश आवश्यक है। Freire (1970) शिक्षा को सामाजिक चेतना से जोड़ते हैं, Altbach (2015) के अनुसार यह नवाचार और राष्ट्रीय प्रगति को गति देती है। विकसित भारत @2047 के संदर्भ में उच्च शिक्षा से कुशल, नैतिक और वैश्विक दृष्टि संपन्न नागरिकों के निर्माण की अपेक्षा है, जहाँ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और डिजिटल शिक्षा का समन्वय एक मूल्य-आधारित ज्ञान समाज की दिशा में मार्ग प्रशस्त करता है।

सारांश रूप में, साहित्य यह संकेत करता है कि 'वसुधैव कुटुंबकम्' शिक्षा को नैतिक, मानवीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। प्राचीन ज्ञान, डिजिटल शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण के बीच यह गहरा वैचारिक संबंध विकसित भारत @2047 की शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य को सशक्त बनाता है और वर्तमान अध्ययन इन्हीं शोध-अंतरालों को संबोधित करता है।

उद्देश्य (Objectives):

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन करना।

प्राचीन ज्ञान परंपरा का आधुनिक उच्च शिक्षा में उपयोग और चुनौतियों का अध्ययन करना।

विकसित भारत @2047 की शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करना।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology):

अध्ययन का प्रकार (Type of Study):

यह अध्ययन द्वितीयक डेटा (Secondary Data) पर आधारित है ।

अध्ययन की सीमा (Scope and Limitations):

डिजिटल शिक्षा और उच्च शिक्षा से संबंधित जानकारी का व्यवस्थित अध्ययन उपलब्ध स्रोतों के माध्यम से किया गया, जिससे एक समग्र शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य विकसित हुआ।

डेटा विश्लेषण (Data Analysis):

संबंधित दस्तावेज़ों और ग्रंथों का अध्ययन कर प्रमुख विषयों और अवधारणाओं की पहचान की गई। प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा, डिजिटल शिक्षा के अवसर–चुनौतियों और विकसित भारत @2047 के शैक्षणिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। इसके आधार पर शोध उद्देश्यों के अनुरूप एक समग्र और मूल्य-आधारित निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

उद्देश्यानुसार विश्लेषण (Objective-wise Interpretation):

उद्देश्य 1: 'वसुधैव कुटुंबकम्' और प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन करना ।

इस अध्ययन ने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और 'वसुधैव कुटुंबकम्' के शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा—जैसे वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन दर्शन—समग्र विकास, नैतिकता और आत्मचिंतन पर आधारित रही है। आधुनिक उच्च शिक्षा में इन ज्ञान परंपराओं का उपयोग भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) के माध्यम से किया जा रहा है। उदा: विश्वविद्यालयों में योग, ध्यान, नैतिक दर्शन, पर्यावरण चेतना तथा जीवन कौशल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शामिल किया जा रहा है, जिससे छात्रों में अकादमिक दक्षता के साथ-साथ मूल्यबोध का विकास हो सके।

उद्देश्य 2: प्राचीन ज्ञान परंपरा का आधुनिक उच्च शिक्षा में उपयोग और डिजिटल शिक्षा के अवसर व चुनौतियों का अध्ययन करना। इस अध्ययन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, MOOCs, ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और AI आधारित शिक्षण टूल्स, तथा अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय रिपोर्टों का विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि प्राचीन ज्ञान और मूल्य आधुनिक उच्च शिक्षा में प्रभावी रूप से समाहित किए जा सकते हैं, और डिजिटल शिक्षा के माध्यम से शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। अध्ययन ने डिजिटल शिक्षा के अवसरों और चुनौतियों को संतुलित करते हुए समग्र और समावेशी शिक्षण दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया।

उद्देश्य 3: विकसित भारत @2047 की शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करना । सरकारी और नीति दस्तावेज, विश्वविद्यालय रिपोर्ट, तथा शिक्षाशास्त्र और शिक्षा नीति पर प्रकाशित साहित्य के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि कौशल-आधारित और रोजगारोन्मुख शिक्षा, डिजिटल एवं तकनीक-आधारित शिक्षा का विस्तार, मूल्य-आधारित एवं समग्र शिक्षा के माध्यम से नैतिक, कुशल और वैश्विक दृष्टि वाले नागरिकों का निर्माण संभव है। अध्ययन ने यह दर्शाया कि प्राचीन ज्ञान परंपरा और डिजिटल शिक्षा का समन्वय विकसित भारत @2047 के लिए एक मूल्य-आधारित और समग्र शैक्षणिक दृष्टिकोण तैयार करता है।

प्राचीन एवं आधुनिक (डिजिटल) शिक्षा दृष्टि तथा विकसित भारत @2047 : एक समन्वित तुलनात्मक विश्लेषण

आयाम	प्राचीन भारतीय शिक्षा दृष्टि	आधुनिक / डिजिटल शिक्षा दृष्टि	विकसित भारत @2047 का शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य
शिक्षा का मूल उद्देश्य	आत्म-साक्षात्कार, चरित्र निर्माण, नैतिक विकास	ज्ञान व कौशल का विकास, रोजगारोन्मुखता	नैतिकता, कौशल और वैश्विक नागरिकता का संतुलन
शिक्षण-अधिगम पद्धति	गुरु–शिष्य परंपरा, संवाद एवं अनुभव आधारित	ऑनलाइन लर्निंग, MOOCs, AI व डिजिटल टूल्स	ब्लेंडेड लर्निंग, अनुभवात्मक एवं नवाचार आधारित
ज्ञान की प्रकृति	मूल्य-आधारित, समग्र एवं जीवनोपयोगी	तकनीकी, बहुविषयक एवं वैश्विक	मूल्य-आधारित ज्ञान समाज की स्थापना
मुख्य अवसर	समग्र व्यक्तित्व एवं नैतिक चेतना का विकास	व्यापक पहुँच, लचीलापन, आजीवन अधिगम	आत्मनिर्भरता, नवाचार और समावेशी विकास
प्रमुख चुनौतियाँ	सीमित संरचना एवं पहुँच	डिजिटल विभाजन, मानवीय स्पर्श की कमी	गुणवत्ता, समानता और मूल्यों का संरक्षण
दृष्टिकोण का आधार	'वसुधैव कुटुम्बकम्' और सह-अस्तित्व	दक्षता, प्रतिस्पर्धा और वैश्विक संपर्क	नैतिक, तकनीकी और वैश्विक दृष्टि का समन्वय

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

निष्कर्ष (Conclusion & Findings):

प्राचीन भारतीय शिक्षा नैतिकता, चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित थी, जिससे समग्र व्यक्तित्व विकास हुआ।

आधुनिक डिजिटल शिक्षा ने ज्ञान, कौशल और सुलभता बढ़ाई, पर डिजिटल विभाजन और मूल्य-संरक्षण की चुनौतियाँ भी उत्पन्न कीं।

विकसित भारत @2047 का शैक्षणिक दृष्टिकोण प्राचीन और आधुनिक शिक्षा के संतुलित समन्वय पर आधारित है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल कौशल विकास नहीं, बल्कि नैतिक, मूल्य-आधारित और वैश्विक दृष्टि वाले नागरिकों का निर्माण होना चाहिए।

सुझाव (Recommendations):

उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का समावेश कर प्राचीन मूल्यों और चरित्र निर्माण को सुदृढ़ किया जाए।

डिजिटल शिक्षा के साथ ब्लेंडेड एवं अनुभवात्मक शिक्षण को अपनाया जाए।

शिक्षा नीति व पाठ्यक्रम में वैश्विक नागरिकता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व शामिल किए जाएँ।

डिजिटल विभाजन कम करने हेतु प्रशिक्षित शिक्षक, पर्याप्त डिजिटल संसाधन और समान पहुँच सुनिश्चित की जाए।

शोध, नवाचार तथा बहुविषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर समग्र विकास को सशक्त किया जाए।

संदर्भ सूचि (References):

Altbach, P. G. (2015). Global perspectives on higher education. Routledge.

Dharma Pal. (2000). Swadeshi education system in pre-colonial India. Academic Press.

Mahā Upaniṣad. (n.d.). Chapter 6, verses 71–73. In The Upanishads. (Ancient Sanskrit text)

Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

Nussbaum, M. C. (1997). Cultivating humanity: A classical defense of reform in liberal education. Harvard University Press.

Organisation for Economic Co-operation and Development. (2019). Trends shaping education 2019. OECD Publishing. https://doi.org/10.1787/trends_edu-2019-en

Radhakrishnan, S. (1951). The philosophy of Indian education. George Allen & Unwin.

Salmon, G. (2013). E-tivities: The key to active online learning (2nd ed.). Routledge.

Selwyn, N. (2016). Education and technology: Key issues and debates (2nd ed.). Bloomsbury Academic.

UNESCO. (2015). Global citizenship education: Topics and learning objectives. UNESCO Publishing. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000232993